सेलू (परभणी)। श्रीश्री रविशंकर को आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.सविता।

मुन्द्रा-कच्छ। आध्यात्मिक कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु.मीरा। मंचासीन हैं ब्र.कु.कमलेश, ब्र.कु.सुशीला व कपिल केसरिया।

लातूर। प्रकृति, पर्यावरण एवं आपदा प्रबंधन अभियान का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.मोहन सिंघल, महापौर सुरेश पवार, राजेश्वर बुके, ब्र.कु.प्रेम तथा अन्य।

भीमवरम। पूर्व मुख्यमंत्री चन्द्रबाबू नायडु को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.रेवती एवं ब्र.कु.विशाला।

मोहाली। सर्वधर्म सम्मेलन में फादर सेबास्टियन बास्को, इमाम जनाब जुबीर अहमद, एचएस मान, हरीश मोंगा, ब्र.कु.प्रेमलता, ब्र.कु.रमा तथा अन्य।

अमेठी। उत्तरप्रदेश के सिचाई मंत्री गायत्री प्रजापति को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.सुमित्रा तथा ब्र.कु.सुषमा।

सत्य ...

या तो उसके मन में झूठ और सत्य का परस्पर संग्राम चलता है और उन दोनों सिंहों की दहाड़ से वह परेशान रहता है और या सत्य का बल क्षीण हो जाने से झूठ ही उस पर सवार होकर उसे चित किये रहता है। इस प्रकार उसके मन में चैन नहीं होता। जैसे कचड़े के ढ़ेर पर मक्खी-मच्छर, चूहे-चमगादड़ या जाला-झांकर आते हैं, वैसे ही उसके मन में भी निकम्मे विचार और बेकार ख्याल आते रहते हैं। इससे उसका दोहरा चरित्र तो होता है परंतु द्वैत के कारण, अनेक मुखौटों के कारण तथा अन्तर्मन में सत्य-असत्य की मुठभेड़ के कारण वह परेशान ही बना रहता है। अत: ऐसे व्यक्ति के मन में सच्ची शांति भी नहीं हो सकती बल्कि झूठी ही शांति होती है।

हमने पहले भी कहा है कि जहां प्रेम और मैत्री का अभाव हो, वहीं व्यक्ति झूठ बोलता है। परंतु प्रेम और मैत्री तो शांति के जनक और जननी है। अत: झूठे के मन में शांति की हत्या हो जाती है अथवा मित्रता का घात हो जाता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि सत्य ही उजाला अथवा प्रकाश है। सत्य का मार्ग ही शांति और प्रेम का मार्ग है। सत्य ही मनुष्यात्मा को भय और दुर्गुणों से छुड़ाने वाला होने से कल्याणकारी भी है। झूठ तो मनुष्यात्मा का शत्रु और पाप का प्रेरक है।

नीति-निपुण और युक्तियुक्त - हम पहले कह आये हैं कि कई परिस्थितियां अपवाद रूप में ऐसी भी होती है कि उनमें सत्य को कुछ क्षण के लिए मौन धारण करना पड़ता है अथवा नीति से जुड़ना पड़ता है। उन परिस्थितियों में यदि सीधे शब्दों में अथवा तत्काल ही सत्य कह दिया जाए तो वह किसी के लिए कठिनाई या हानि भी ला सकता है। उदाहरण के तौर पर कभी-कभी डॉक्टर के लिए यह जरूरी हो जाता है कि वह रोगी की मानसिक दुर्बलता को सामने रखते हुए उसे तुरंत ही यह सत्य न बताए कि वह रोगी शीघ्र ही मृत्यु का शिकार होने वाला है। इसी प्रकार, हमें देखना यह होता है कि सत्य का उद्देश्य तो कल्याण करना ही है। अत: यदि इस उद्देश्य की पूर्ति सत्य को तुरंत प्रकाशित करने से नहीं होती तो सत्य को सरलतापूर्वक बाद में बताने के लिए फिलहाल स्थगित भी करना पड़ता है। अन्यश्च, हमने यह जो कहा है कि कई बार सत्य को मान्यता देने पर भी उसे व्यवहार में नहीं लिया जा सकता, उसका एक उदाहरण पृथ्वी के आकार से सम्बंधित है। वह यह है कि पृथ्वी तो गोल है परंतु जब हम किसी मकान का नक्शा बनाते है या उसका निर्माण करते हैं तब हम पृथ्वी को गोल मानकर भवन-निर्माण नहीं करते बल्कि चपटा मानकर ही करते हैं। ऐसे ही जीवन में कई ऐसे अवसर आते है जब कल्याण को सामने रखते हुए अल्पकाल के लिए सत्य-कथन को स्थगित करना पड़ता है।

इसी प्रकार, कभी ऐसा भी होता है कि सत्य को सीधे शब्दों में बताने से परिस्थिति बिगड़ भी सकती है, झगड़ा बढ़ भी सकता है, अकल्याण होने की दशा भी पैदा हो सकती है। ऐसी हालत में सत्य को गोल-मटोल शब्दों में भी बताना पड़ता है जिससे सत्य कह भी दिया जाये और बात भी न बिगड़े। यह नीति है अथवा युक्ति है। परंतु इस नीति का प्रयोग किसी के अकल्याण के लिए नहीं बल्कि कल्याण ही के लिए किया जाता है। और इसका अभिप्राय झूठ बोलना या इसका अर्थ डरना नहीं बल्कि सफलतापूर्वक सत्य कहना या कल्याण करना ही होता है।

लेख के कलेवर की सीमा को सामने रखते हुए यहां हम एक-दो बातें और कहकर समाप्त करेंगे। एक तो यह कि सभी बातों के सत्य को जानना सदा कल्याणकारी नहीं होता। कई बातों को न पुछना, उनकी गहराई में न जाना या उनके सत्य के पीछे न पड़ना ही बुद्धिमानी है। इसलिए ही कहा गया है कि जहां अनभिज्ञ रहना ही अधिक आनंदकर हो, वहां जानकारी प्राप्त करना गलती है। किन्हीं बातों के सत्य की जानकारी हानिकर होती है। हम सिगरेट पीकर ही उससे होने वाली हानियों को जानें और पता करें कि सत्य क्या है - यह तरीका गलत है। इसी प्रकार, आणविक अस्त्रों-शस्त्रों का निर्माण कैसे होता है, हम इनके सत्य को खोजने लगें -यह भी गलत है क्योंकि इसकी हमें आवश्यकता ही क्या है ? परंतु कुछ बातें ऐसी है कि उनके बारे में सत्य को न जानना बहुत हानिकर है। उदाहरण के तौर पर अपने स्वरूप के विषय में तथा कर्म-अकर्म-विकर्म की गति के बारे में सत्य-ज्ञान प्राप्त करना अत्यंत आवश्यक है। यदि हम इन सत्यों को जाने बिना कोई विकर्म करते हैं तो हम यह तर्क नहीं दे सकते कि हमें इस नियम का पता ही नहीं था।

संगठन में शक्ति होती है

जीवन में हम भी अगर परिवार में एक होकर के रहते हैं। तो पारिवारिक समस्याओं का कई तरह से समाधान कर सकते है। हमें जीवन जीने के लिए भी आसानी हो जाती है। इकट्ठे होते हैं तो उस संगठन को तोड़ने की क्षमता किसी की भी नहीं होती है। इस तरह से जब ये बात उन बच्चों को समझ में आ गयी, तब से उन्होंने निश्चय कर लिया कि आज के बाद हम कभी भी जीवन में लड़ेंगे नहीं। एक-दूसरे से अलग नहीं होंगे। एक होकर के हम चलेंगे। तो ये जीवन जीने की कला है कि जब हम अपने मन, वचन, कर्म को एक कर देंगे, तो जीवन में जो शक्ति आयेगी, उस शक्ति के आधार से कोई हमें तोड़ नहीं सकता है। हम जीवन में कभी दिलशिकस्त नहीं होंगे। हम जीवन में कभी भी उदासी में आकर के नहीं टूटेंगे। हर रीति से हम अपने आपको सशक्त बनाकर के चलते चलेंगें। जीवन जीना आसान हो जायेगा। अगर ये तीनों शक्ति अलग-अलग दिशा में चली गई, तो इन शक्तियों को तोड़ना, इन शक्तियों को भ्रमित करना, आसान होगा, कोई हमारे मन को भ्रमित कर देगा। कोई हमारी वाणी को भ्रमित कर देगा और कोई हमारे कर्म को भ्रमित कर देगा। इस प्रकार जीवन में दिलशिकस्तपना, जीवन से हारने का अनुभव होगा और हम टूटने लगेंगे। ये जीवन को तोड़ने की विधि है। यही आज संसार में हो गया है कि मनुष्य किस प्रकार छोटे-छोटे बच्चों को भी भ्रमित करते हैं। जवानों को भ्रमित करते हैं। पद से हटा देते हैं। इसलिए गीता में हमें भगवान ने यही सीख दी ''ओम ततसत्'' यानि मन, वचन, कर्म को एक करते हुए ये समस्त तत्व के अंदर सत्य भाव, श्रेष्ठ भाव और दृढ़ता को ले आयें, तो जीवन में कोई उसको तोड़ नहीं सकेंगे। तो इस तरह ये हमारा जीवन है और जीवन जीने की कला है।

अब हम थोड़ी देर के लिए मेडिटेशन करेंगे और अपने मन को परमात्मा में एकाग्र करेंगे। जिस प्रकार मेडिटेशन की विधि हमने गीता के पांचवे और छठवें अध्याय से आरंभ की। जहां परमात्मा ने हमें बताया कि किस प्रकार अपने मन को स्थित करना है। आत्म-भाव या आत्म-स्थिति में जब मन को स्थित कर लेते हैं तो परमात्मा की याद सहज स्वाभाविक आती है। सामने वो दिव्य स्वरूप है, परमात्मा

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, ब्र.कु.उषा

परम प्रकाश, तेजोमय परंतु जैसे कहा चंद्रमा के समान शीतल प्रकाश से सम्पन्न है। जो असीम प्यार की वर्षा करते हैं। हम अपने मन के अंदर अंतरचक्षु से उस दिव्य स्वरूप को निहारते जायें। उसका अनुभव करते जायें। तो जैसे मैं विचार देती जाती हूँ, आप अपने मन को भी उस अनुसार यात्रा पर ले चलेंगे।

अपने मन और बुद्धि को....समस्त बाह्य बातों से....समेट लेते हैं .....और अपने अंतरचक्षु से..... भ्रकुटी के मध्य में..... स्वयं को देखें ..... दिव्यपुंज ज्योतिस्वरूप में .....मैं आत्मा अजर, अमर, अविनाशी हूँ..... चैतन्य शक्ति हूँ.....धीरे-धीरे..... अपने मन और बुद्धि को ले चलते हैं.....परमात्मा के सानिध्य में....देह और देह के संबंधों से .....अपने मन और बुद्धि को न्यारा करते हुए.....पंच तत्व की दुनिया से.....दूर.....अनंत शांतिधाम में.....दिव्य प्रकाश से भरपूर उस दिव्य लोक में.....अन्तरचक्षु से स्वयं को देखती हूँ.....प्रकाश पुंज के रूप में.....उस दिव्य लोक में.....मैं आत्मा...अपने संपूर्ण....सतोगुणी स्वरूप में स्थित हूँ.....सतोगुण का प्रवाह.....चारों ओर प्रवाहित हो रहा है....ये सतोगुण.....जैसे इंद्र धुनष के सप्त रंगों की तरह है..... जो मुझ आत्मा में..... दिव्य तेज का अनुभव करा रहे है..... ये सतोगुण का प्रभामंडल दिव्य और अलौकिक है.....मैं स्वयं को अपने पिता परमात्मा के.....सानिध्य में देखती हूँ.....मेरे पिता परमात्मा.....दिव्य तेजोमय.....सूर्य के समान प्रकाशमान हैं.....असीम प्रेम के सागर हैं..... ज्ञान के सागर हैं.....ज्ञान की रोशनी से मेरे मन के अंधकार को दूर करते जा रहे हैं.....कितनी सौभाग्यशाली आत्मा हूँ मैं..... जो परमात्मा के असीम प्यार की पात्र आत्मा बन गयी.....पिता परमात्मा.....वरदानों से मुझ आत्मा को वरदानी आत्मा बना दिया..... असीम शक्तियों की किरणें..... मुझ आत्मा को.... सशक्त बनाती जा रही हैं.....मैं आत्मा..... स्वयं को धन्य-धन्य अनुभव कर रही हूँ.....मैं आत्मा.....सर्व प्राप्तियों से .....स्वयं को भरपूर करती जा रही हूँ.....परमात्मा के इस दिव्य प्यार में..... स्नेह के सागर में....समाती जा रही हूँ.....प्रभु प्रेम की किरणों को.... स्वयं में समाते ....मैं अपने मन और बुद्धि को वापिस इस पंच तत्व की दुनिया की ओर....शरीर में भ्रकुटी के मध्य में..... स्थित करती हूँ.....और प्रेम के प्रवाह को हर कर्म में प्रवाहित कर रही हूँ। (क्रमश:)